पहली बार श्रीमंदिर के जलक्रीड़ा मण्डप में

अनुष्ठित हुई चंदन यात्रा 2020

कोरोना वैश्विक महामारी के दुष्प्रभाव के चलते लगभग एक हजार वर्षों की अनुष्ठित होनेवाली श्रीजगन्नाथ भगवान की चंदनयात्रा की सुदीर्घ एवं गौरवशाली परम्परा चंदन तालाब में अनुष्ठित न होकर श्रीमंदिर के अन्दर अवस्थित जलक्रीड़ा मण्डप में अनुष्ठित हुई है जो 21 दिनों तक चली। गौरतलब है कि श्रीजगन्नाथ पुरी धाम के गोवर्द्धन पीठ के 145वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य परमपाद स्वामी निश्चलानन्दजी सरस्वती महाराज के दिव्य व आध्यात्मिक निर्देशानुसार तथा भगवान जगन्नाथ के प्रथम सेवक पुरी धाम के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी महाराजा की आध्यात्मिक स्वीकृति से आयोजकों ने यह ऐतिहासिक निर्णय लिया कि अक्षय तृतीया 2020 के पावन दिवस पर भगवान जगन्नाथ की चंदन यात्रा और उनकी विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा हेतु उनके नये रथों के निर्माण का कार्य 26अप्रैल से श्रीमंदिर प्रांगण में ही आरंभ होगा और पूरे विधि–विधान के साथ हुआ। श्रीमंदिर की ऐसी मान्यता है कि भगवान जगन्नाथ एक सामान्य मानव की तरह ही सुख–दुःख का अनुभव करते हैं। यहां तक कि वे वैशाख–जेठ की भीषण गर्मी से परेशान होकर जलक्रीड़ा करना चाहते हैं,नौका विहार करना चाहते है।चंदन यात्रा उनकी उसी मानवीय लीला का एक स्वरुप है। प्रतिवर्ष वैशाख की अक्षय तृतीया के दिन जहां उनकी विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए नये रथों के निर्माण का कार्य आरंभ होता है,वहीं जगन्नाथ जी की विजय प्रतिमा मदनमोहन आदि की चंदन यात्रा भी शुरु होती है। 2020 चंन्दन यात्रा 21 दिनों तक श्रीमंदिर के जलक्रीड़ा मण्डप में चली जिसमें श्रीमंदिर के समस्त रीति–नीति के तहत 'जात भोग' संपन्न होने के उपरांत भगवान जगन्नाथ की विजय प्रतिमा मदनमोहन,रामकृष्ण,लक्ष्मी,सरस्वती आदि को नौका विहार के लिए जलक्रीड़ा मण्डप लाया गया जहां पर पहले से ही गजदंत आकार की नौकाएं एक साथ जोड़कर तथा हंस के आकार का स्वरुप प्रदान कर

सुसज्जित करके रखी गई थीं। 2020 की चंदनयात्रा मात्र सेवायतों ने आयोजित की तथा उन्होंने ही उस अलौकिक सुख का आनन्द उठाया।
अशोक पाण्डेय